संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

ISSN 0975-735X

शोध दिशा

57

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

कामकाजी महिलाओं की भूमिका के बदलते आयाम एवं उभरती चुनौतियाँ

डॉ॰ सुमित्रा शर्मा
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रस्थिति एवं भूमिका के स्वरूप समाज द्वारा निर्धारित होते हैं एवं समय-समय पर परिवर्तित होते रहते हैं। राल्फ लिंटन के अनुसार 'किसी विशेष व्यवस्था में कोई व्यक्ति निर्दिष्ट समय में जो स्थान प्राप्त करता है उस व्यवस्था के अनुसार वह उसकी प्रस्थिति है।' दुर्खीम का मत है कि समाज एक वृहद इकाई है एवं समाज में व्यक्ति मात्र एक सूक्ष्म इकाई है। समाज व्यक्तियों के लिए सामाजिक तथ्यों का निर्धारण करता है, एवं व्यक्ति को मात्र उनका पालन करना होता है। इन सामाजिक तथ्यों के उल्लंघन पर समाज द्वारा औपचारिक व अनौपचारिक आधारों पर दंड का भी निर्धारण होता है। प्रस्थिति के स्वरूप (प्रदत्त/अर्जित) का निर्धारण एवं महत्त्व समाज के स्वरूप पर निर्भर करता है। जहाँ एक ओर परंपरागत समाज में प्रदत्त प्रस्थिति महत्त्वपूर्ण होती है वहीं आधुनिक व गैरपरंपरावादी समाज में अर्जित प्रस्थिति की प्रधानता बढ़ जाती है। प्रस्थिति का गत्यात्मक स्वरूप ही भूमिका है। आधुनिक जटिल समाज में एक ओर परंपरागत प्रस्थिति व उससे जुड़ी भूमिका अभी भी अस्तित्व में है, वहीं दूसरी ओर कई प्रकार की नवीन अर्जित प्रस्थिति व उनसे जुड़ी भूमिकाएँ विस्तारित हो रही हैं। वर्तमान में अर्जित प्रस्थिति व उससे संबद्ध भूमिका का महत्त्व बढ़ रहा है। इन दोनों के मध्य अप्रत्यक्ष रूप से संघर्ष भी बढ़ता जा रहा है। भूमिका से जुड़ी तीन अवधारणायें प्रस्तुत प्रपत्र में महत्त्वपूर्ण हैं–

–भूमिका अपेक्षा–प्रस्थिति के अनुरूप भूमिका निर्वाह की अपेक्षा।

–भूमिका तनाव–जब व्यक्ति अपेक्षाओं के अनुरूप भूमिका निर्वाह में कठिनाई महसूस करे।

–भूमिका संघर्ष–जब दो भिन्न प्रस्थितियों की भूमिका निभानी हो और उससे मानसिक अंतर्द्वंद्व का अनुभव होने लगे।

भूमिका से संबंधित ये तीनों अवधारणाएँ यद्यपि पृथक-पृथक होते हुए भी परस्पर जुड़ी हुई हैं एवं एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। समाज में महिलाओं की प्रस्थिति का निर्धारण एवं प्रस्थिति के अनुसार भूमिका का निर्धारण करने में समाज की ही महती भूमिका होती है। भारतीय समाज में, जो कि एक परंपरावादी पितृसत्तात्मक समाज रहा है, महिलाओं की प्रस्थिति हमेशा दोयम दर्जे की रही है एवं उसी के आधार पर उनकी भूमिका भी घर की चार दीवारी तक ही सीमित कर दी गई थी। वर्तमान में आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण, पूँजीवाद, शिक्षा, संचार-क्रांति आदि के कारण महिलाओं की परंपरागत प्रस्थिति व भूमिका में निरंतर परिवर्तन आ रहा है। परंपरागत प्रतिबंध टूट रहे हैं, महिलाओं के समक्ष नवीन कार्यक्षेत्रों के दायरे खुल रहे हैं, जिससे वे अब मात्र घरेलू दायरों में सीमित रहने वाली घरेलू महिला न रहकर, बाह्य कार्यक्षेत्रों में कार्य कर

ISSN 0975-735X

के आय अर्जन करती हैं। वह घर परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियों में सहभागिता भी करती हैं। आर्थिक रूप से स्वावलंबी हो रही हैं, जो आत्मविश्वास से परिपूर्ण है। बाह्य कार्यक्षेत्रों में कार्य करते हुए वह एक कामकाजी महिला के रूप में अपनी पहचान भी बना रही हैं लेकिन इन सभी के साथ समाज द्वारा निर्धारित परंपरागत प्रस्थितियों (माँ, बहन, पत्नी, पुत्री आदि) एवं उनसे जुड़ी भूमिका अपेक्षाओं में अभी भी समाज में परिवर्तन नहीं आ रहा है। इस कारण से आधुनिक समाज में कामकाजी महिलाएँ परंपरागत एवं नवीन उभरती हुई प्रस्थिति एवं उनसे जुड़ी हुई भूमिकाओं के मध्य द्वंद्व में उलझ गई हैं। बाह्य कार्यक्षेत्र से जुड़ी नवीन प्रस्थितियों एवं उनके अनुरूप भूमिका अपेक्षाएँ भी कामकाजी महिलाओं के समक्ष नवीन चुनौतियाँ व संघर्ष उत्पन्न कर रही हैं, जिसके कारण कामकाजी महिलाओं को शारीरिक व मानसिक स्तर पर कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

वर्तमान समाज में नवीन मूल्यों, विश्वासों, मान्यताओं एवं नवीन व्यवहार प्रतिमानों के कारण कामकाजी महिलाओं में भूमिका संघर्ष अपनी चरमोत्कर्ष पर है। एक ओर तो समाज में पुरानी मान्यताएँ हैं तथा उनके अनुकूल व्यवहार करने के निर्धारित प्रतिमान है तथा दूसरी ओर समाज की बदलती आवश्यकताओं तथा परिस्थितियों के अनुकूल नवीन व्यवहार प्रतिमानों की माँग भी है। अत: समाज में महिलाओं के संबंध में प्रस्थिति की धारणा में तो परिवर्तन आ रहा है, साथ ही उससे संबद्ध भूमिका भी निरंतर परिवर्तन की प्रक्रिया में है, जिसे सहज ही स्वीकार नहीं किया जा रहा। अत: आधुनिक समाज में कामकाजी महिलाओं में बदलती भूमिका के कारण भूमिका संघर्ष की स्थिति उभर रही है।

कुछ उभरते प्रश्न

व्यवस्था में परिवर्तन व समय की मांग ही है कि वर्तमान में महिलायें घरेलू कार्यक्षेत्र के जिम्मेदारियों के साथ ही बाहरी कार्यक्षेत्रों में भी अपना पूर्णत: योगदान दे रही हैं, लेकिन जिस गति से यह बदलाव आ रहा है, उसी गति से समाज में स्थापित मानक एवं मूल्यों में परिवर्तन नहीं हो रहा। पारिवारिक स्तर पर समाजीकरण के तरीकों में परिवर्तन धीमी गति से हो रहा है, जिसका प्रभाव सामाजिक व्यवस्था में प्रत्यक्ष रूप में देखा जा सकता है। व्यवस्था में परिवर्तन के साथ ही व्यवहार प्रतिमानों में परिवर्तन नहीं आने से समाज में असंगतता भी उभर रही है, जिससे कुछ प्रश्न उभरकर हमारे समक्ष आ रहे हैं। घरेलू स्तर पर किये जाने वाले कार्यों में क्या लैंगिक आधार पर भेद किया जाना उचित है? इस प्रकार के भेद को कैसे समाप्त किया जा सकता है? महिलायें दोहरी भूमिका में सामंजस्य के कारण किस प्रकार से मानसिक तनाव को झेलने को मजबूर होती है और इसका पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर क्या प्रभाव पड़ता है?

तारा सिंघल (2003) ने जयपुर शहर की 300 कामकाजी महिलाओं का अध्ययन किया इस शोध का प्रमुख उद्देश्य महिलाओं के रोजगार के क्षेत्र में आने से परिवार में आने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करना है। सिंघल का मत है कि घर परिवार में आज भी महिलाओं से पारंपरिक भूमिकाओं की अपेक्षा की जाती है, जिससे परिवार में संघर्ष उत्पन्न होता है।

माला भंडारी (2004) ने दिल्ली शहर की 100 कामकाजी महिलाओं का अध्ययन किया, उनका मत है कि कामकाजी महिलाएँ आर्थिक रूप में स्वतंत्र व आत्मनिर्भर हुई हैं, लेकिन परिवार में आर्थिक निर्णयों में महिला की भागीदारी कम होती है, उसे प्राप्त करने की सामाजिक स्वतंत्रता उनके पास नहीं है। बदलती हुई परिस्थिति में दोहरी भूमिका में पति व अन्य सदस्यों का

सहयोग सहयोगी की तरह नहीं वरन अनुकंपा की तरह मिलता है।

वाई॰पी॰ सिंह (2014) का मत है कि आधुनिक भारतीय महिलाएँ न केवल घरेलू जिम्मेदारियों का निर्वाह कर रही हैं बल्कि आय अर्जन कर परिवार को आर्थिक सहारा भी प्रदान कर रही हैं। लेकिन यहाँ सिंह प्रश्न उठाते हैं कि इससे महिलाएँ आत्मनिर्भर हुई हैं या अलग प्रकार के शोषण की शिकार हो रही हैं? उनका तर्क है कि कामकाजी महिलाएँ अभी भी प्राचीन प्रतिबंधों से बाहर नहीं निकल पाई हैं।

हमारे परंपरागत पुरुषवादी मानसिकता से ग्रस्त समाज में पुरुषों को घरेलू कार्यों से दूर ही रखा जाता है, उनके लिए बाहरी कार्यक्षेत्र ही निर्धारित किए जाते हैं। समाज में पुरुषों का समाजीकरण इस प्रकार से किया जाता है कि उनकी स्वयं की मानसिकता सिर्फ बाहरी कार्यक्षेत्रों के कार्यों को करने तक ही सीमित रहती है। प्राचीन समाज में महिलाओं के कार्यक्षेत्र का दायरा घर-परिवार तक ही सीमित था, इस कारण भूमिका संघर्ष की बहुत अधिक समस्या महिलाओं के समक्ष नहीं उभरती थी। लेकिन वर्तमान में महिलाएँ भी बाहरी कार्यक्षेत्र में अपने पुरुष साथी के साथ सहभागिता कर रही है और यह सहभागिता देश व समाज की प्रगति एवं विकास के लिये तथा समानता के मूल्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक भी है। लेकिन इस नवीन व्यवस्था में आवश्यकता है कि पुरातन मानसिकता में परिवर्तन आये। पुरुषों से भी घर-परिवार के कार्यक्षेत्रों में सहभागिता अपेक्षित होनी चाहिए। बाह्य कार्यक्षेत्र में जब महिलाएँ अपने पुरुष साथी के साथ सहभागिता कर सकती हैं तो घरेलू कार्यक्षेत्र में महिलाओं द्वारा पुरुष साथी की सहभागिता की अपेक्षा करना कैसे अनुचित हो सकता है? महिलाओं को अपने पुरुष साथी व पारिवारिक सदस्यों का सहयोग मिलने से उनकी कई प्रकार की चुनौतियाँ व संघर्ष स्वत: समाप्त हो सकते हैं। लेकिन इस प्रकार की विचारधारा व मानसिकता में या तो परिवर्तन नहीं आ रहा, या परिवर्तन की गति बहुत धीमी है।

दोहरी भूमिका एवं उभरती चुनौतियाँ

वर्तमान आधुनिक समाज में कामकाजी महिला से तात्पर्य है 'वह महिला जो उत्पादक कार्यों में संलग्न हो एवं उनसे उन्हें आय का अर्जन होता हो'। वैसे तो महिलाएँ हमेशा ही कामकाजी रही है, क्योंकि घरेलू कार्यक्षेत्रों का दायरा उन्हीं के जिम्मे रहा है। महिलाएँ माँ, पत्नी, बहन आदि के रूप में इन प्रस्थितियों से जुड़ी भूमिकाओं के प्रति पूर्णत: समर्पित रहते हुए पारिवारिक स्तर पर अपनी जिम्मेदारियों को निभाने का दायित्व बखूबी निभाती हैं। लेकिन इन प्रस्थितियों से जुड़े कार्यों को करने से उन्हें आय का अर्जन नहीं होता, अत: सामाजिक रूप में इन्हें कामकाजी होने का दर्जा प्राप्त नहीं होता। कामकाजी महिला औपचारिक क्षेत्रों (संगठित/गैर संगठित) में औपचारिक प्रस्थिति जो कि अर्जित प्रस्थित होती है, पर कार्य कर आय अर्जन करती है, जिससे वे न केवल घर-परिवार की आर्थिक स्थिति में सहयोग करती हैं, वरन् वह स्वावलंबी होकर कामकाजी महिला के रूप में अपनी पहचान भी बनाती हैं।

समाज में परिवर्तन का सबसे क्रांतिकारी साधन शिक्षा है, जो समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारतीय समाज में महिलाएँ शिक्षा के उच्चस्तर तक पहुँच रही हैं, अत: परिवर्तन आना तो स्वाभाविक ही है। अब महिलाओं का दायरा मात्र घरेलू सीमा तक सीमित न रहकर बाहरी कार्यक्षेत्र में भी विस्तृत हो रहा है, जिससे देश, राज्य व परिवार की सामाजिक-आर्थिक प्रगति विकास में महिलाएँ अपना योगदान दे रही हैं। कामकाजी महिलाएँ

ISSN 0975-735X

समाज में तार्किक आधार पर अपना दृष्टिकोण व विचारधारा सशक्तता के साथ रखने में सक्षम हैं। घर व बाहर दोनों क्षेत्रों की जिम्मेदारियों को वह बखूबी निभा रही हैं। परंपरागत निर्धारित प्रतिमानों का खंडन करके वे न केवल आर्थिक रूप से सशक्त हुई हैं, वरन स्वयं के जीवन व पारिवारिक एवं बाह्य कार्यक्षेत्र के स्तर पर भी अपनी निर्णयात्मक भूमिका निभा रही हैं।

कामकाजी महिलाएँ प्रत्येक कार्यक्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रही हैं। आय का अर्जन कर स्वावलंबी भी बन रही हैं। पारिवारिक स्तर पर अपना आर्थिक सहयोग भी प्रदान करती हैं, आर्थिक स्वतंत्रता आने से सामाजिक, राजनीतिक दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आ रहा है। समाज में प्रचलित प्राचीन व्यवहार प्रतिमान व मूल्य-व्यवस्था में भी परिवर्तन आया है। वर्तमान में महिलाओं का औपचारिक क्षेत्रों में कार्य करने के प्रति समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन को स्पष्टत: देखा जा सकता है। केटालिस्ट रिपोर्ट 2020 के अनुसार भारत में कुल श्रमशक्ति में महिलाओं की भागिदारी 19.9 प्रतिशत है। सरकार द्वारा कराये गये रोजगार सर्वे 2021 के अनुसार संगठित क्षेत्रों में रोजगार के क्षेत्र में पुरुषों की भागिदारी 70.7 प्रतिशत है एवं महिलाओं की 29.3 प्रतिशत है। वैयक्तिक स्तर, सामूहिक स्तर एवं सरकार के स्तर पर भी महिलाओं को औपचारिक कार्यक्षेत्रों से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। महिलाएँ घर, परिवार व बाह्य कार्यक्षेत्रों में विविध भूमिकाओं में देखी जा सकती है, लेकिन इतनी उपलब्धियों के पश्चात भी समाज में महिलाओं से रखी जाने वाली पूर्व स्थापित भूमिका अपेक्षाओं में अभी भी परिवर्तन नहीं आ रहा। अत: कामकाजी महिलाएँ द्वंद्व की स्थिति का सामना करती हैं कि वे किस स्तर तक घरेलू एवं कार्यस्थल से जुड़ी भूमिकाओं को सही ढंग से निष्पादित करें। वे भूमिका तनाव एवं भूमिका संघर्ष की स्थिति का सामना करने को मजबूर होती हैं। कामकाजी महिलाओं के समक्ष बहुआयामी प्रस्थिति एवं उनसे जुड़ी भूमिका अपेक्षाओं के बढ़ जाने से असंगतता व परस्पर विरोध होने के कारण भूमिका संघर्ष की स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं, जो कामकाजी महिलाओं में अवसाद, तनाव, सामंजस्यहीनता, मानसिक अंतर्द्वंद्व की स्थिति की ओर घकेलती हैं।

कामकाजी महिला से पारिवारिक सदस्य घरेलू स्तर पर परंपरागत भूमिकाओं की अपेक्षा करते हैं, जो भूमिका संघर्ष का प्रमुख कारण है। यदि पारिवारिक सदस्यों द्वारा कामकाजी महिला के दायित्वों के प्रति सहयोगात्मक अभिवृत्ति हो तो परिवार में भूमिका संघर्ष की स्थिति को कम किया जा सकता है। भूमिका संघर्ष की स्थिति का प्रमुख कारक भूमिका अपेक्षाएँ हैं। कामकाजी महिला को जहाँ एक ओर रोजगार के कारण मानसिक संतुष्टि, आत्माभिव्यक्ति, व्यक्तित्व का विकास व आर्थिक स्वतंत्रता के अवसर प्राप्त होते है, वहीं दूसरी ओर वह घरेलू कार्यों में तनाव, व्यवसाय में तनाव, दोहरा कार्यभार के कारण वह दोहरे स्तर पर की जाने वाली भूमिका अपेक्षाओं के प्रति परिवार के सदस्यों की नकारात्मक अभिवृत्ति के रूप में चुकाती हैं। कामकाजी महिलाओं के संदर्भ में समाज में आधुनिकीकरण से नवीन मूल्यों, विश्वासों, मान्यताओं तथा नवीन व्यवहार प्रतिबंधों के कारण भूमिका संघर्ष अपने चरम सीमा पर दिखाई देता है। एक ओर समाज में पुरानी मान्यताओं तथा उसके अनुकूल व्यवहार करने के निर्धारित तरीके हैं, वहीं दूसरी ओर समाज की बदलती आवश्यकता तथा परिस्थितियों के अनुकूल नवीन व्यवहार की माँग भी है। कामकाजी महिलाओं के समक्ष सामाजिक अपेक्षाओं के अनुसार खरे न उतरने के कारण भूमिका संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर शहर से 50 कामकाजी महिलाओं अध्ययन किया गया। अध्ययन

क्षेत्र से उत्तरदाताओं चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि द्वारा किया गया। अध्ययन के लिये प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों को आधार बनाया गया। कुल उत्तरदाताओं में से 70प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा की दोहरी भूमिका के कारण वे भूमिका तनाव का सामना करती हैं। वे पारिवारिक एवं व्यवसायिक स्तर पर तनाव झेलने पर मजबूर है एवं उन्हें कई स्तरों पर भूमिका संघर्ष का सामना करना पड़ता है।

कामकाजी महिलाओं के समक्ष भूमिका संबंधित चुनौतियाँ :

भारतीय संस्कृति में घरेलू स्तर पर किये जाने वाले कार्यो का दायित्व महिलाओं का ही माना जाता है। कामकाजी महिलाओं के समक्ष इन कार्यों के नियोजन को लेकर चुनौतीपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो जाती है, क्योंकि उसे दोहरे स्तर के दायित्वों को निभाना होता है। 21 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मत है कि अचानक से अवांछित स्थिति के उत्पन्न होने जैसे किसी पारिवारिक सदस्य के बीमार होने, मेहमान के आने या अन्य कई कारणों से जब वे कार्यस्थल पर होती हैं, तब वे घरेलू कार्यों के नियोजन को लेकर तनाव का सामना करती हैं, क्योंकि घरेलू स्तर पर कार्य के नियोजन को लेकर अपेक्षा महिला से की जाती है। ऐसी स्थिति में वे भूमिका संघर्ष का सामना करती हैं।

दोहरी जिम्मेदारियों के कारण कामकाजी महिला को बाह्य कार्यक्षेत्र के अनुसार समय प्रबंधन भी आवश्यक होता है। 18 प्रतिशत महिलाओं का मानना है कि दोहरे दायित्वों के कारण व्यक्तिगत स्तर पर अपनी अभिरुचि के कार्यों को करने का समयाभाव होता है, जिससे कभी-कभी तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो जाती है। अभिरुचि के कार्यो को करने से मानसिक संतुष्टि के साथ ही तनाव से मुक्ति भी मिलती है, लेकिन समयाभाव के कारण महिलाओं से उनकी अभिरुचियाँ छूटती जाती हैं।

वर्तमान उपभोगवादी युग में जहाँ एक ओर निर्वहन के लिए दोहरी आय का अर्जन आवश्यक है, जिसमें महिलाएँ पूर्णरूप में सहयोग भी कर रही हैं, वहीं दूसरी ओर घरेलू स्तर पर परंपरागत भूमिकाओं को निभाने की अपेक्षा भी महिलाओं से अधिक की जाती है। अध्ययन में यह देखने में आया कि पारिवारिक स्तर पर जिम्मेदारियों की अधिकता होने व कोई अन्य आवश्यकता होने पर महिला को ही कार्यालय से अवकाश लेना पड़ता है। आकस्मिक अवकाश लेने से कामकाजी महिला को अपने ऑफिसर से कई प्रकार की बातें सुनने पड़ती हैं विशिष्ट रूप से निजी क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को, ऐसी परिस्थितियों में महिलायें मानसिक अंतर्द्वंद्व का सामना करती है, जो न केवल वैयक्तिक स्तर पर वरन् सामाजिक स्तर पर भी हानीकारक हो सकता है।

वे कामकाजी महिलायें जिनके ऑफिस व घर में बहुत अधिक दूरी है या ऑफिस दूसरे शहर में है, ऐसी स्थिति में समय व दूरी का प्रबंधन करना एक चुनौतीपूर्ण स्थिति के रूप में उनके समक्ष उपस्थित हो जाता है। 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मत है कि यह स्थिति उनके समक्ष भूमिका तनाव व भूमिका संघर्ष को और अधिक बढ़ा देता है। 12 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि निकट के नातेदारी संबंधों में सामाजिक समारोह के अवसरों पर अवकाश प्राप्त न होने की स्थिति में या कार्य की व्यस्तता के कारण समयाभाव होने पर उनके समक्ष चुनौतीपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ऐसी स्थिति में कामकाजी महिला के समक्ष सामाजिक दबाव के कारण मानसिक तनाव व अवसाद की स्थिति उत्पन्न होती है, जो कि चिंताजनक स्थिति है।

कामकाजी महिला को पारिवारिक स्तर पर घरेलू कार्यों का नियोजन करने में कई प्रकार

ISSN 0975-735X

से भूमिका संघर्ष का सामना करना पड़ता है। इस नियोजन को बनाये रखने की कोशिश जीवन में एक आपाधापी बनी रहती है, जो तनाव का प्रमुख कारण बनता है इस भागदौड़ भरी जिंदगी में कामकाजी महिलाओं को व्यक्तिगत स्तर पर रुचि के कार्यों के लिए समय ही नहीं मिल पाता। वे पारिवारिक एवं व्यवसायिक स्तर पर प्रस्थिति से जुड़ दायित्वों को पूर्ण करने में लगी रहती हैं। स्वयं का जीवन तो लगता है कि जैसे कहीं खो गया हो। दोहरे स्तर की व्यस्तता के कारण वह कई सामाजिक कार्यों में जैसे उत्सव त्योहार, विवाह, जन्मदिन आदि सामाजिक अवसरों में सम्मिलित होने से वंचित रह जाती हैं, इस कारण उन्हें कई प्रकार की उलाहने भी सुनने पड़ते हैं, जिससे तनाव और बढ़ जाता है। सामाजिक प्राणी होने के कारण स्वभावत: मानव को सामाजिक मेलजोल अच्छा लगता है लेकिन महिला को व्यस्तता के कारण इससे वंचित रहना पड़ता है। पारिवारिक स्तर पर जिम्मेदारियों को पूर्ण न कर पाने के कारण उसे मानसिक तनाव का सामना करना पड़ता है। कामकाजी महिलाओं में से 30 प्रतिशत महिलाओं का मत है कि भी पारिवारिक कार्यों की समस्या का समाधान के लिए प्रत्येक स्तर पर घरेलू सहायक की सहायता लेकर वह घरेलू कार्यों का पारिवारिक सदस्यों के मध्य विभाजन करके इस तनाव से मुक्त रहने की कोशिश करती हैं और कभी-कभी व्यावसायिक व पारिवारिक स्तर पर जब तनाव उत्पन्न होता है एवं भूमिका संघर्ष को महसूस करती हैं तब अति आवश्यक कार्य को प्राथमिकता देकर भूमिका संघर्ष को दूर करती हैं।

इस प्रकार शिक्षा, आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप बाह्य कार्यक्षेत्रों में महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर खुले हैं। महिलाएँ बाह्य कार्यक्षेत्र में कार्य कर रही हैं आय का अर्जन भी करती हैं। केवल आर्थिक रूप से ही सशक्त नहीं हो रही घर परिवार का आर्थिक सहारा भी बन रहे हैं लेकिन इस बदलते युग के साथ पुरुष अभी भी परंपरावादी मानसिकता अभी भी बनाए रखे हैं। अभी भी पुरुषवादी मानसिकता में परिवर्तन नहीं आया या बहुत धीमी गति से परिवर्तन आ रहा है। जिस कारण कामकाजी महिलाओं को घरेलू व बाह्य कार्यक्षेत्र दोनों स्तर पर अपनी जिम्मेदारियों को निभाने के लिए कई प्रकार से भूमिका संघर्षों का सामना करना पड़ता है। कामकाजी महिलाएँ को न केवल मानसिक तनाव बल्कि शारीरिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है, जो प्रगतिशील समाज के लिए उचित नहीं। अत: आवश्यकता इस बात की है कि इस नवीन उभरती व्यवस्था में नवीन विचारधाराओं एवं प्रतिमानों को भी अपनाया जाए, जो घरेलू स्तर पर लैंगिकता के भेद को समाप्त कर सके वह बाह्य कार्यक्षेत्रों में भी महिलाओं को पूर्ण सहयोग मिले। जिससे कामकाजी महिलाएँ देश, राज्य, परिवार एवं वैयक्ति स्तर पर वृद्धि मे अपना पूर्ण सहभागिता प्रदान कर सकें।

सुझाव : महिला का कामकाजी होना न केवल समय की आवश्यकता है वरन महिला सशक्तिकरण एवं स्वतंत्रता व आत्मनिर्भरता की दिशा में एक ठोस कदम है। कामकाजी होने से महिला सामाजिक प्रस्थिति में परिवर्तन आता है, प्रस्थिति परिवर्तन से भूमिका परिवर्तन स्वाभाविक है। प्रस्थितियों का दायरा बढ़ने से भूमिकाएँ भी बढ़ जाती हैं, लेकिन साथ ही दोहरे स्तर पर की जाने वाली भूमिका अपेक्षाएँ भी। ये भूमिका अपेक्षाएँ ही हैं जो कामकाजी महिलाओं में सामाजिक स्तर पर भूमिका तनाव व भूमिका संघर्ष का कारण बनती है। साथ ही कार्यस्थल, घरेलू, पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर की जाने वाली भूमिका अपेक्षाओं को पूर्ण न कर पाने की स्थिति में कामकाजी महिलायें भूमिका तनाव व भूमिका संघर्ष का सामना करती है। अत:

आवश्यक है कि परंपरागत भूमिका अपेक्षाओं में परिवर्तन आये व समाज के विचारों का दायरा बदले पारिवारिक स्तर पर किये जाने वाले कार्यों में लैंगिकता के आधार पर किये जाने वाला भेद समाप्त हो, जिसमें घरेलू कार्य मात्र महिला तक ही सीमित न हो वरन वह सभी की सामूहिक जिम्मेदारी हो व पारिवारिक सदस्यों के सहयोग से कामकाजी महिला घरेलू स्तर व कार्य स्थल पर तनाव मुक्त होकर कार्य कर सकती है, जिससे उनकी कार्यक्षमता में भी बढ़ोतरी हो सकती है।

संदर्भ

1. Bhandari, Mala (2004). Quality if Life of Urban Working Women. Abhijeet Publication, Delhi.
2. Davis Kingsley (1965). Human Society. The Macmillan Co., New York.
3. https://www.catalyst.org/research/women-in-the-workforce-india/
4. https://www.tribuneindia.com/news/nation/only-29-women-workforce-in-organised-job-sector-317042
5. Linton, Ralf (1947). Concept of Role & Status (ed.). Reading in Social Psychology, Newcomb & Hearly, New York.
6. Mathur, Deepa (1992). Women, Family & Work. Rawat Publication, Jaipur.
7. Shafi Aneesa (2002). Working Women in Kashmir Problems & Prospects. APH Publishing Corporation, New Delhi.
8. Singh, Y.P. (2014). Women Enterpreneurship, Challenges Facing Women's Equality in the 21st Century. Garima Prakashan, Jaipur.
9. Singhal, Tara (2003). Women & Family.RBSA Publishers, Jaipur.

ISSN 0975-735X